।। ओ३म् ।।

आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का उद्घोषक पाक्षिक

वार्षिक शुल्क : 100/-
आजीवन : 1100/-
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
पोस्टल रजि. सं.
U.P./MBD-64/2013-16
दयानन्दाब्द १८६,
सृष्टि सं.-१९६०८५३११४

वर्ष-13 / अंक-9 / भाद्रपद शु. 7 से आश्विन कृ. 7 सं. 2071 वि. / 1 से 15 सितम्बर 2014 / अमरोहा (उ.प्र.) / पृ.- 10 / प्रति- 5/-

केरल में शिलान्यास के अवसर पर 'आर्यरत्न' महाशय धर्मपाल जी के अभिनन्दन का एक दृश्य -केसरी

महाशय धर्मपाल वेद अनुसंधान केन्द्र का शिलान्यास

केरल। 15 अगस्त को केरल में नई वैदिक क्रान्ति का उदय हुआ जिसमें देश-विदेश के लाखों लोगों ने सीधा प्रसारण देखकर शुभ सन्देश प्रेषित किये। यज्ञ के अद्भुत दृश्यों को देखकर विश्व के आर्यजन भाव विभोर हुये। केरल के अन्यत्र भागों से पधारे लोगों ने कहा कि कार्यक्रम बेहद मनमोहक व प्रेरक रहा। स्वाधीनता दिवस पर 2008 याज्ञिकों ने एक साथ समृधि यज्ञ में आहुतियां दीं।

आगामी अंक में प्रकाशित होगा इस शिलान्यास समारोह पर विशेष परिशिष्ट

संसद में दयानंद की गूँज

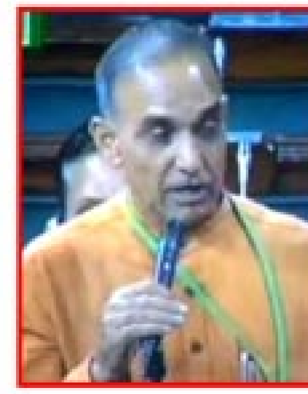

दिल्ली। भारतवर्ष की स्वाधीनता के बाद यदा-कदा भारतीय संसद में आर्यसमाज विषयक चर्चा सुनाई पड़ती थी परन्तु मंगलवार, 22 जुलाई 2014 को सांसद डॉ. सत्यपाल सिंह द्वारा एक इतिहास रचते हुए शून्यकाल में आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन दर्शन एवं सुधारात्मक कार्यों, आर्यसमाज का सामाजिक जीवन में महत्व, स्वाधीनता संग्राम में आर्यसमाज का योगदान आदि विषयों पर अपना लिखित वक्तव्य पढ़ते हुए भारत सरकार से पुरजोर आग्रह सहित महर्षि दयानन्द सरस्वती सरीखे महान राष्ट्रभक्त का चित्र भारतीय संसद के केन्द्रीय कक्ष में लगाए जाने की ओर ध्यान आकृष्ट किया।

पन्द्रहवीं लोकसभा के लिये भारतीय जनता पार्टी के टिकिट पर बागपत लोकसभा क्षेत्र से विजयी हुए डॉ. सत्यपाल सिंह पर आर्यसमाज

विश्व की अनूठी आर्यसमाज गांधीधाम का वार्षिकोत्सव 12 से

गांधीधाम (गुजरात)। विश्व विख्यात आर्यसमाज गांधीधाम का वार्षिकोत्सव 12 से 14 दिसम्बर, शुक्रवार से रविवार तक आयोजित किया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि इसी आर्यसमाज द्वारा भुज में भूकम्प में निराश्रित हुए बच्चों के लिए जीवन प्रभात प्रकल्प की स्थापना की गयी है। जहां मानवता की मिसाल कायम की गयी है। यह एक ऐसी आर्यसमाज है जहां रात-दिन ऋषिवर दयानन्द के मिशन के प्रचार-प्रसार हेतु अनुकरणीय कार्य किया जा रहा है। इस आर्यसमाज के यशस्वी मंत्री वाचोनिधि आर्य व प्रधान पुरुषोत्तम भाई पटेल हैं।

वास्तव में यदि आर्यसमाज की जीवन्तता देखनी है तो इस आर्यसमाज का अवश्य ही अवलोकन करें। आयोजन समिति ने सभी श्रद्धालुओं से सपरिवार पधारने की अपील की है।

१३ से होगी शोध संगोष्ठी

भोला (मेरठ)। स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान गुरुकुल प्रभात आश्रम, भोला, मेरठ, उत्तर प्रदेश में मकर सौर संक्रान्ति के अवसर पर 13 व 14 जनवरी 2015 को वैदिक वांग्मय में देवताओं का स्वरूप विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। आयोजक मण्डल ने विद्वानों से अपने-अपने वैदुष्यपूर्ण आलेख (Font- Walkman Chanakaya-901) में टंकित कराकर ई-मेल : pavamani1986@gmail.com पर भेजने को कहा है। स्तरीय आलेखों का प्रकाशन सॉफ्ट और हार्ड कॉपी उपलब्ध होने पर ही पावमानी में किया जा सकेगा। लेख के प्रारूप गोष्ठी में पढ़े जाएंगे।

सिंगापुर व थाईलैण्ड चलो

सार्वदेशिक सभा, दिल्ली के तत्वावधान में 01 व 02 नवम्बर 2014 को सिंगापुर तथा 08 व 09 नवम्बर को थाईलैण्ड में होंगे अन्तरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन।

देवेश व उरूज़ पीएच0डी0 की उपाधि से विभूषित

अमरोहा। महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली ने राजनीति विज्ञान विषय में देवेश कुमार तथा अहमद उरूज़ को पीएच.डी. की उपाधि से विभूषित किया है।

श्री देवेश ने अपना शोध प्रबन्ध 'लाला लाजपत राय के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आर्यसमाज का प्रभाव' विषय पर तथा डॉ. उरूज ने अपना शोध प्रबन्ध 'संविदा सरकारों के काल में केन्द्र-राज्य संबन्ध (उत्तर प्रदेश के सन्दर्भ में)' विषय पर जे.एस. हिन्दू (पी. जी.) कालेज, अमरोहा में राजनीति विज्ञान विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर व अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार रुस्तगी (आर्य) के निर्देशन में पूर्ण किया।

सम्प्रति डॉ. देवेश डब्ल्यू.टी.एम. डिग्री कालेज, फतेहपुर माफी में तथा डॉ. उरूज ए.डब्ल्यू. फैज-ए-आम इण्टर कालेज में सेवारत हैं।

वाणी ने किया टॉप

नई दिल्ली। हमदर्द पब्लिक स्कूल दिल्ली की छात्रा कुमारी वाणी बंसल ने बारहवीं कक्षा की परीक्षा में अपने विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। उन्होंने 95 प्रतिशत अंक प्राप्त कर विद्यालय में सर्वाधिक अंकों का कीर्तिमान बनाया है। वाणी अभी चार्टर्ड अकाउंटेंसी परीक्षा की तैयारी कर रही हैं।

सम्मानित पाठक कृपया ध्यान दें

यदि आर्यावर्त केसरी न मिले तो...

सम्मानित सदस्यों! आर्यावर्त केसरी आपकी सेवा में प्रत्येक माह की ०१ व १६ तारीख को प्रेषित किया जाता है। दस दिन तक न मिलने पर कृपया दूरभाष पर अवगत कराएं, पुनः प्रेषित किया जायेगा। कहीं-कहीं से ऐसी शिकायतें भी मिलती हैं कि उन्हें आर्यावर्त केसरी लम्बे समय से नहीं मिला है या सदस्यता सहयोग दिये जाने के बाद भी नहीं मिल रहा है, तो इस विषय में अमरोहा- कार्यालय से दूरभाष पर पुष्टि करने के बाद कृपया सम्बन्धित डाकघर के पोस्टमास्टर, अथवा सम्भव हो तो प्रवर अधीक्षक डाकघर- संबंधित प्रखण्ड, से भी इसकी शिकायत करें। हम तो, अपने स्तर पर समुचित कार्यवाही करेंगे ही, ताकि आपको केसरी यथासमय मिलता रहे और डाक के वितरण में किसी भी प्रकार की गड़बड़ी न हो।

-डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी
आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.)
फोन- 05922-262033, 09758833783

आर्ष गुरुकुल नोएडा के सफलता की ओर बढ़ते कदम

अशोक गुलाटी
नोएडा।

भारत के प्रतिष्ठित गुरुकुलों में आर्ष गुरुकुल, नोएडा का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। समय की दृष्टि से आर्ष गुरुकुल सबसे अर्वाचीन है, किंतु थोड़े समय में ही यहां के ब्रह्मचारियों ने बड़ी-बड़ी सफलताएं प्राप्त की हैं। यहां के ब्रह्मचारी कशिश आर्य ने बी.ए. संस्कृत (आनर्स) में दिल्ली विश्वविद्यालय में टॉपर रहते हुए सर्वाधिक अंक प्राप्त किये हैं, तथा गोल्ड मैडल भी प्राप्त किया है। दिल्ली विश्वविद्यालय में संस्कृत के लिए बी.एड. की अर्हता भी ऊंची मेरिट से प्राप्त की है। ब्र. राजकिशोर ने जी.आर.एफ. की परीक्षा उत्तीर्ण कर आर्ष गुरुकुल का गौरव बढ़ाया है तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित हंसराज कालेज में पढ़ाने का गौरव भी हासिल किया है। वर्तमान में जे.एन.यू. से एम.फिल. कर रहे हैं। ब्र. श्याम सुन्दर ने नेट की परीक्षा उत्तीर्ण की है। आचार्य डॉ. जयेन्द्र के अनेक शिष्यों ने अनेक प्रकार की सफलताएं प्राप्त की हैं।

२६ सितम्बर से होगा यज्ञ एवं ध्यान योग शिविर

मनुदेव वानप्रस्थ
बहादुरगढ़ (हरियाणा)।

आत्मशुद्धि आश्रम का 48वां स्थापना दिवस-वार्षिकोत्सव समारोह पर ऋग्वेदीय वृहद् यज्ञ एवं निःशुल्क ध्यान योग विज्ञान शिविर २६ सितम्बर से २ अक्टूबर तक स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी (मुख्याधिष्ठाता) के सान्निध्य में आयोजित किया जाएगा। समारोह के संयोजक वानप्रस्थी ईशमुनि ने जानकारी देते हुए बताया कि इस अवसर पर योग निर्देशक एवं यज्ञ के ब्रह्मा पातंजल योगधाम, ज्वालापुर के डॉ0 स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती होंगे तथा प्रमुख वक्ता होंगे- आचार्य राजहंस, आचार्य सत्यपाल, डॉ0 मुमुक्षु, पं0 रामजीवन योगाचार्य, सुखदेव वर्मा, आचार्य रवि, आचार्य खुशीराम। वेदपाठ कन्या गुरुकुल लोवां कलां की छात्राओं द्वारा किया जाएगा। संतोष आर्या- गन्नौर, सत्यपाल मधुर- दिल्ली, पं0 रमेशचन्द्र आर्य- झज्जर व रामदुलारी बंसल तथा आश्रम के ब्रह्मचारियों द्वारा भजनोपदेश भी होंगे।

समारोह में आर्यमहिला जागृति सम्मेलन, योग सम्मेलन व चरित्र निर्माण सम्मेलन होंगे। आश्रम के पदाधिकारियों ने यजमान बनने के इच्छुक लोगों से अपना नाम सूची में लिखवाने व अधिक से अधिक संख्या में लोगों से समारोह में भाग लेने की की अपील की है। अधिक जानकारी के लिए निम्न फोन नम्बरों पर सम्पर्क कर सकते हैं- 0989657800६२ (विक्रमदेव शास्त्री), 0981२640989 (वानप्रस्थ ईशमुनि)।

२१ को होगी पूर्णाहुति

बरेली। योग साधना आश्रम, नैनीताल रोड के तत्वावधान में चतुर्वेद परायण महायाग व योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। वैदिक प्रचारक आचार्य राजेन्द्र जिज्ञासु ने जानकारी देते हुए बताया कि 13 जुलाई से २१ सितम्बर तक चलने वाले इस शिविर में भारत स्वाभिमान ट्रस्ट के सुयोग्य प्रशिक्षक द्वारा योग का प्रशिक्षण दिया जाएगा। उन्होंने यह भी बताया कि २१ सितम्बर को पूर्णाहुति होगी व यज्ञ के ब्रह्मा आश्रम के संचालक स्वामी क्रान्तिवेश होंगे।

: विज्ञापन कॉलम :

इस कॉलम में अपने प्रतिष्ठान अथवा संस्थान के क्रियाकलापों तथा उपलब्धियों एवं जन्मदिन, वर्षगांठ तथा विभिन्न पर्वों पर शुभकामनाओं के प्रकाशन के लिए तुरंत सम्पर्क करें और अधिक से अधिक लाभ उठाएं।

चलभाष- 09758833783, 09412139333

वैवाहिक विज्ञापन

यदि आपको योग्य वर या वधू की तलाश है..

तो फिर भला, देर किस बात की? आज ही देश-विदेश में बड़े पैमाने पर प्रसारित होने वाले आर्यावर्त केसरी के वैवाहिक कॉलम में अपना विज्ञापन भेजिए अथवा भिजवाइए और चुनिए एक सुयोग्य जीवन साथी। तो आइए! आज ही, अपना विज्ञापन बुक कराइए और पाइए रिश्ते-ही-रिश्ते....

न्यूनतम दो बार की विज्ञापन सहयोग राशि रु. 350/- तथा तीन बार की रु. 500/- निवेदित है।

-सम्पादक, आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, उ.प्र. (चलभाष : 08273236003)

आर्यावर्त प्रकाशन अमरोहा द्वारा प्रकाशित पुस्तक

आज ही मंगाएं

दयानन्द सप्तक

(सवैया संग्रह)

कवि- वीरेन्द्र कुमार राजपूत

प्रकाशक- आर्य उप प्रतिनिधि सभा
कार्यालय : आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उ0प्र0)
दूरभाष : 05922-262033

मूल्य : तीन सौ रु0 प्रति सैंकड़ा

ऋषि जन्मभूमि टंकारा यात्रा- 2015

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, आर्यावर्त कॉलोनी, मुरादाबादी गेट, अमरोहा के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द बोधोत्सव, टंकारा (गुजरात) यात्रा- 15 फरवरी से २१ फरवरी २015

प्रस्थान : 15 फरवरी २015 को प्रातः 7 बजे मुरादाबाद से आला हज़रत एक्सप्रेस 4311 अप। 14 फरवरी २015 विश्राम एवं रात्रि भोजन, आर्य समाज मंदिर, गंज स्टेशन मार्ग, मुरादाबाद, दूरभाष- 0941006583२ वापसी : २1 फरवरी २015 रात्रि अहमदाबाद मेल से देहली तक।

: परिभ्रमण कार्यक्रम :

पोरबन्दर, द्वारिका, सोमनाथ मंदिर, सावरमती आश्रम, अहमदाबाद आदि दर्शनीय स्थल

प्रस्थान से लेकर आगमन तक रेल-बस आरक्षण, भोजन, जलपान, आवास-निवास, परिभ्रमण की समुचित व्यवस्था उप सभा द्वारा होगी। आप 3000/- रूपये का ड्राफ्ट आर्य उप प्रतिनिधि सभा, अमरोहा के नाम से खाते में भिजवा दें या कार्यालय अमरोहा को नकद हस्तगत कराकर रसीद प्राप्त कर लें। राशि 3000/- 15 दिसम्बर 2014 तक प्राप्त हो जानी चाहिए। समुचित व्यवस्था में आपका सहयोग प्रार्थनीय।

यात्रियों को आवश्यक निर्देश :- □ गाड़ी के निर्धारित समय से आधा घंटा पूर्व सम्बन्धित रेलवे स्टेशन पर पहुंचना। □ यात्रा में कम से कम सामान साथ रखें। □ ओढ़ने, बिछाने की चादर, टॉर्च, नोट बुक, पैन्सिल, मतदाता परिचय-पत्र, दैनिक आवश्यकता की वस्तुएं तौलिया, शेविंग का सामान, तेल आदि।□ बहुमूल्य सामान साथ न रखें। □ अपनी औषधि साथ रखें। □ आवास या निकट के दूरभाष नम्बर कोड सहित अपना पूरा पता, आयु सहित भेजें। □ आप कब और कहां किस प्रकार पहुंच रहे हैं, सूचित करें। □ परिभ्रमण काल में आवास आर्यसमाज मन्दिर, पोरबन्दर, अहमदाबाद में रहेगा। □ कार्यक्रम संयोजक को व्यवस्था परिवर्तन का अधिकार है।

आओ! ऋषि जन्मभूमि की यात्रा का कार्यक्रम बनाएं...

□ श्रीराम गुप्ता- संरक्षक, □ हरिश्चन्द्र आर्य- अधिष्ठाता (05922-263412),□ डॉ. अशोक कुमार आर्य- प्रधान (09412139333),□ □ डॉ. यतीन्द्र विद्यालंकार- मंत्री (09412634672), □ ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य- कोषाध्यक्ष (09412493724), □ नरेन्द्र कांत गर्ग- संयोजक (09837809405)।

नरेन्द्र मोदी का लालकिले से आह्वान

देश की आजादी के अड़सठवें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी ने लाल किले की प्राचीर से एक ऐसी बात कही जो आम नौकरशाहों के लिए बड़ी महत्वपूर्ण है। देश में जो संस्कृति आज तक फल-फूल रही है, वह यही है कि नौकरी लगने के बाद वह सरकारी दामाद हो जाता है, उस पर कोई नियम कानून लागू नहीं होता है न वह समय पर कार्यालय आता है, न समय पर कार्यालय से जाता है और न वह नौकरी को नौकरी समझता है। वह नौकरी को अपनी बपौती समझकर वह सभी कुछ करता है जो नौकरी में नहीं करना चाहिए। अगर वह शराबी है, तो विभाग उसे दण्डित नहीं करेगा उल्टा उसके परिवार के किसी सदस्य को दरियादिली दिखाकर उसकी जगह में नौकरी में अनआफिसियली रख लेता है। शराबी या बदचलन नौकरशाह फिर भी घर में नशे में सराबोर रहेगा इनके लिए सरकार ने कोई नियम नहीं बनाये हैं, इतिहास गवाह है कि आज भी केन्द्रीय हो या राज्य स्तरीय विभाग लगभग २० प्रतिशत अयोग्य शराबी और चोर लोगों को दसियों वर्षों से ढो रहा है जबकि एक अच्छे आचरण का होशियार पढ़ा लिखा ईमानदार निर्व्यसनी आदमी दर-दर की ठोकरें खा रहा है प्रधानमंत्री का जो संकल्प है, गरीबों के लिए, पिछडों के लिए, शोषितों और वंचितों को आगे बढने और अपनी प्रतिभा को निखारने का अवसर देने वाला है जिसकी भूरि-भूरि प्रशंसा होनी चाहिए। आज प्रधानमंत्री ने वह छेद ढूंढ लिया है, जहाँ से बीस प्रतिशत खजाना खाली हो रहा है। अब सम्भव है कि बैक डोर से नौकरी पाने वाले स्कूलों को सरकारी कार्यालयों को बार समझने वाले निठल्ले नौकरशाहों के लिए कोई ठोस कानून बनेगा और वे ढूंढ-ढूंढकर बाहर किये जाएंगे और उन पर कृपा करने वालों पर भी ठोस कार्यवाही होगी।

कान्ति बल्लभ जोशी,
चन्द्र कॉलोनी, स्टेशन रोड, टनकपुर

आर्यसमाज परिसर, बदायूं में निर्वाचन के बाद उपस्थित पदाधिकारी व सदस्यगण- केसरी।

राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी सम्मेलन 7 को

दिल्ली (डॉ0 अनिल आर्य)। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद (पंजी0) का 36वां वार्षिक राष्ट्रीय अधिवेशन राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी सम्मेलन 7 सितम्बर को प्रातः 9 से 5 बजे तक योग निकेतन सभागार (स्वामी योगेश्वरानन्द जी की तपस्थली) 30-ए, रोड नं0-78, पश्चिमी पंजाबी बाग, दिल्ली-1100२6 में हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। इस अवसर पर १२ से २5 वर्ष तक के युवाओं को आर्यसमाज के साथ जोड़ने का संकल्प, राष्ट्र की ज्वलंत समस्याओं पर आर्य समाज का चिन्तन, देश भर के चुने हुए आर्य युवा प्रतिनिधियों का भव्य समागम एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी व प्रान्तीय अध्यक्षों का परिचय कराया जाएगा।

आर्यसमाज का चुनाव सम्पन्न

▯ रतन लाल- प्रधान, नन्हे लाल- मंत्री व धर्मेन्द्र बने कोषाध्यक्ष

नन्हे लाल कश्यप
बदायूं (उ.प्र.)

आर्यसमाज बदायूं के वार्षिक निर्वाचन की प्रक्रिया आर्यसमाज परिसर में सम्पन्न हुई, जिसमें 41 सदस्यों की मौजूदगी में सर्वसम्मति से रतनलाल भारद्वाज एडवोकेट को प्रधान, नन्हे लाल कश्यप को मंत्री व धर्मेन्द्र आर्य को कोषाध्यक्ष चुना गया है।

पूर्व घोषित कार्यक्रम के अनुसार रविवार को साप्ताहिक यज्ञ व सत्संग के बाद वर्ष २014-२015 के निर्वाचन की प्रक्रिया शुरू की गई। निवर्तमान मंत्री प्रेमबाबू एडवोकेट ने गत वर्ष की कार्यवाही पढ़कर सुनाई जिसकी सर्वसम्मति से पुष्टि की गई। साथ ही वर्ष भर के आय-व्यय का ब्यौरा कोषाध्यक्ष द्वारा प्रस्तुत किया गया।

इस मौके पर रानू सिंह, केशव गर्ग, अमित वर्मा, पुष्पा देवी, अनामिका सिंह, पुनीत कश्यप, मुदित शर्मा, अजय कुमार, प्रयाग सिंह, शेखर वर्मा, विशाल वैश्य, प्रियांशु, मुनीश कुमार, सुधीर कश्यप समेत निर्वाचित पदाधिकारी व काफी संख्या में आर्य सदस्य मौजूद रहे।

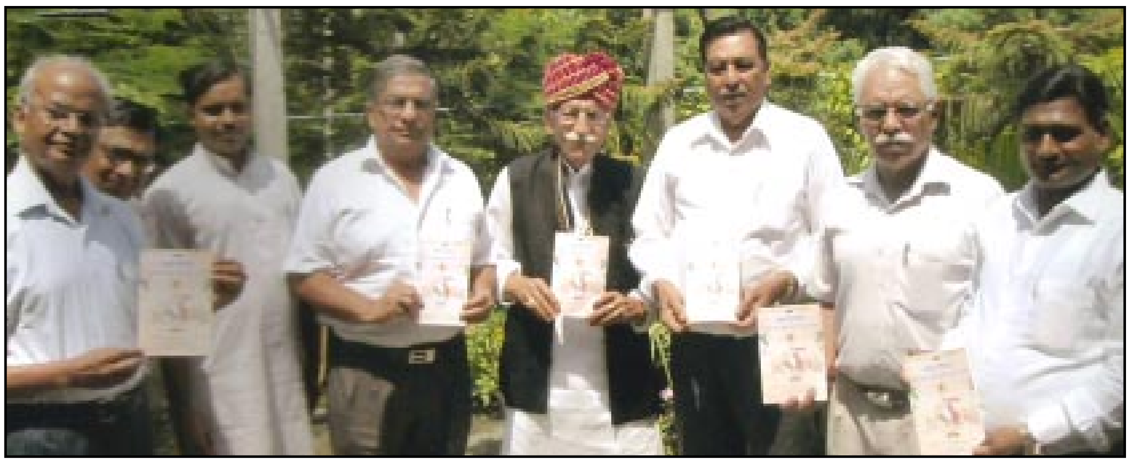
आर्य परिवार सम्मेलन में विवरण पुस्तिका का विमोचन करते आर्यरत्न महाशय धर्मपाल जी- केसरी।

आर्य परिवार सम्मेलन में विचार रखते अतिथि- केसरी।

आठवें आर्य परिवार सम्मेलन में हुआ समुचित जीवन साथियों का चयन

- आर्यरत्न महाशय धर्मपाल ने किया विवरण पुस्तिका का विमोचन
- समान, गुण, कर्म स्वभाव वालों के हों आपस में रिश्ते : अजय सहगल
- संस्कारित जीवन साथी चुनने का उत्तम मंच है आर्य परिवार परिचय सम्मेलन : राजीव आर्य

अर्जुन देव चड्ढा
नई दिल्ली

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित 8वां आर्य परिवार परिचय सम्मेलन आर्यसमाज दिल्ली में सम्पन्न हुआ।

सम्मेलन के उद्घाटन के अवसर पर मुख्य अतिथि अजय सहगल (ट्रस्टी- टंकारा ट्रस्ट) ने कहा कि समान गुण, कर्म और स्वभाव वाले युवक-युवतियों के बीच रिश्ते आर्य मर्यादा की स्थापना का दूरदर्शितापूर्ण प्रयास है। समान विचार वाले जीवन साथी से विवाह समझौतावादी गृहस्थ जीवन से छुटकारा दिलाता है। सम्मेलन के आयोजन की पूर्ण सफलता के लिए उन्होंने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को बधाई दी, व कहा कि अथक परिश्रम के लिए राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा तथा उनकी टीम साधुवाद की पात्र है।

कार्यक्रम का शुभारम्भ अतिथियों अजय सहगल, राजीव आर्य, अरुण प्रकाश वर्मा, रवि चड्ढा, रामप्रसाद याज्ञिक, विभा आर्या ने दीप प्रज्ज्वलन कर, ईश्वर स्तुति के साथ किया। इस अवसर पर भजनोपदेशिका सुदेश आर्या ने प्रभुभक्ति का भजन प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए राजीव आर्य (महामंत्री- आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली) ने कहा कि जन्मपत्रिका के स्थान पर केवल गुण, कर्म और स्वभाव को मिलाना चाहिए। हमारा उद्देश्य आर्य विचारों के परिवारों को जोड़ना है।

परिचय सम्मेलन में विशिष्ट अतिथि शिवकुमार मदान (उपप्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) ने कहा कि आधुनिक युग में युवक-युवतियों के बीच बढ़ते ईगो ने विवाह-संस्था पर प्रहार किया है। इसका एकमात्र समाधान एक समान विचार के बीच विवाह संबन्धों को जुड़ना है। इसी के लिए आर्यसमाज ने इन सम्मेलनों को प्रारम्भ किया है।

आर्यावर्त केसरी (अमरोहा) के प्रधान सम्पादक आर्य विद्वान डॉ० अशोक कुमार आर्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द के 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के मिशन ने यह एक बड़ा कार्य किया है। विवाह-संस्कार द्वारा आर्य परिवार बनाने की अनूठी पहल की है। अनेक लोग इस संदर्भ में मुझसे अपने बच्चों के रिश्तों की सलाह मांगते हैं।

सम्मेलन की महिला संयोजिका विभा आर्या ने कहा कि आर्य-संस्कार में पले-बढ़े युवक-युवतियों के लिए दहेज सर्वथा त्याज्य है।

सम्मेलन में जिन युवक एवं युवतियों का पंजीकरण किया गया था, उनका फोटा सहित बोयोडाटा विवरणिका पुस्तिका में प्रकाशित किया गया। यह विवरणिका पुस्तिका सभी पंजीकृत युवक-युवतियों को निःशुल्क दी गयी।

महिला संयोजिका विभा आर्या, रश्मि वर्मा, अविषा आर्या, पूर्णिका आर्या, सुषमा सेठ, कविता आर्या, अशोक आर्य (दिल्ली), विश्वामित्र मक्कड़, संदीप कुमार, रविप्रकाश आर्य, सुभाष चावला ने काउण्टर पर जिम्मेदारी संभाल रखी थी।

सम्मेलन-स्थल पर ३२ परिवारों ने आपसी बातचीत कर, रिश्ते की बात को आगे बढ़ाया। चाय, नाश्ता, तथा भोजन की आर्यसमाज कीर्तिनगर द्वारा निःशुल्क व्यवस्था की गयी थी। सम्मेलन का संचालन राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा, और महिला संयोजक विभा आर्या, दिल्ली के संयोजक एस0पी0 सिंह तथा आर्यसमाज कीर्तिनगर के मंत्री सतीश चड्ढा एवं कोटा के रामप्रसाद याज्ञिक द्वारा किया गया। मंत्री सतीश चड्ढा ने सभी आगन्तुक अतिथियों, युवक-युवतियों, अभिभावकों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

इस अवसर पर कार्यक्रम स्थल पर उपस्थित अतिथियों द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय समाचार पत्र आर्यावर्त केसरी का विमोचन भी किया गया।

निराश्रितों के बीच अर्जुन देव चद्ड़ा ने मनाया 71वां जन्म दिवस

- मिठाई, चिप्स, बिस्किट व गिफ्ट पाकर खुश हुए बच्चे
- शताधिक आयु की कामना

राकेश चड्ढा
कोटा (राजस्थान)।

आर्यसमाज के जिला प्रधान अर्जुन देव चड्ढा बच्चों के बीच जन्मदिन मनाते हुए- केसरी।

मधुस्मृति संस्थान के बच्चे शुक्रवार को मंगलगान गा रहे थे। गायत्री मंत्र के उच्चारण के साथ जन्मदिन के मंगलगीत भी गुनगुना रहे थे। आखिर मधुस्मृति संस्थान के बच्चों के अपने प्रिय मामा जी का जन्मदिन जो था। समाजसेवी और आर्यसमाज के जिला प्रधान अर्जुन देव चड्ढा ने अपना 71वां जन्मदिन मधुस्मृति संस्थान के निराश्रित बच्चों के बीच मनाया। इस अवसर पर बच्चों ने 'मामाजी' के दीर्घायु की कामना की तथा बधाई दी।

इस अवसर पर चड्ढा ने कहा कि जो व्यक्ति दूसरों के सुख और दुख में सहभागी होता है, वहीं परोपकार है। मंदिर में मूर्तियों को भोग लगाकर पुण्य कमाने वाले लोग तो बहुत मिल जाएंगे, लेकिन ईश्वर के द्वारा निर्मित इन साक्षात् मूर्तियों को अपना बना लेने से बड़ा कोई पुण्य नहीं हो सकता है। हर व्यक्ति को अपने मांगलिक कार्यो को जरूरतमंदों और निराश्रितों के बीच ही मनाना चाहिए।

आर्यसमाज के विद्वान रामप्रसाद याज्ञिक ने कहा कि भारतीय संस्कृति खुशी के क्षणों को दूसरों के बीच बांटना सिखाती है। आर्यसमाज विज्ञान नगर के प्रधान जी.एस. दुबे ने कहा कि अर्जुन देव चड्ढा मधुस्मृति में आकर सदैव बच्चों को पारिवारिक माहौल देते हैं। इन बच्चों को कभी भी अपने परिजनों की कमी महसूस नहीं होने देते हैं। इस अवसर पर पूनम चड्ढा भी उपस्थित थीं। उल्लेखनीय है कि अर्जुन देव चड्ढा अक्सर मधुस्मृति संस्थान में आते रहते हैं। वे अपने जीवन के मांगलिक कार्यो के दौरान और तीज त्यौहार पर भी संस्थान के बच्चों को उपहार देते रहे हैं। ऐसे में चड्ढा को बच्चे प्यार से मामाजी कहते हैं। ऐसे में 'प्यारे मामाजी' के जन्मदिन के अवसर पर बच्चों ने 'हैप्पी बर्थ डे टू यू.....' 'लकड़ी की काठी, काठी का घोड़ा......', रे मामा रे मामा... सुन लो सुनाता हूं कहानी....', नानी तेरी मोरनी को मोर ले गया....' सरीखे गीतों की प्रस्तुति दी। इसके बाद चड्ढा ने बच्चों को मिठाई, चिप्स, बिस्किट और उपहार भेंट किए तो उनके चेहरे खिल उठे।

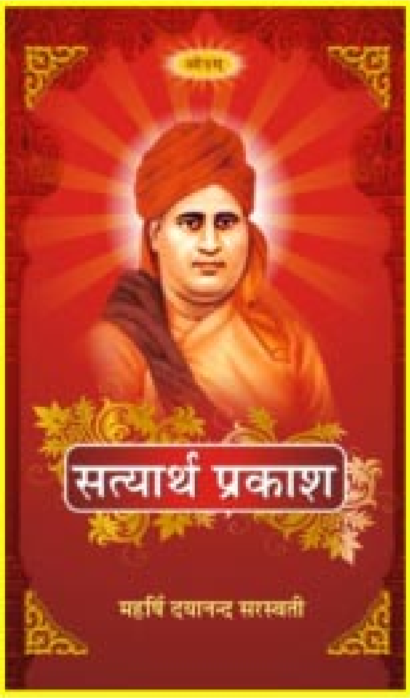

ऋग्वेद || ओ३म् || यजुर्वेद

'सत्यार्थ प्रकाश'

के प्रकाशन हेतु आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा की अनूठी एवं क्रांतिकारी योजना

पहली बार लगातार 1,00,000 प्रतियाँ छापने का दृढ़ संकल्प

- तांकि आगामी पाँच वर्षों में विश्व के कोने-कोने तक उन सभी महानुभावों के घरों तक महर्षि के इस क्रांतिकारी ग्रन्थ को पहुँचाया जा सके, जो आर्यसमाजी हैं अथवा जिनकी आस्था ऋषिवर दयानन्द के विचारों में है।
- ऋषि का ऋण हम सभी पर है। इससे उऋण होने के लिए इस 'मिशनरी' योजना में आप भी अपनी पुनीत भागीदारी कर सकते हैं।
- सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन का कार्य प्रारम्भ हो चुका है। इसका पहला संस्करण इसी वर्ष अक्टूबर माह में ऋषि निर्वाण दिवस पर आ रहा है।

विशेष : प्रकाशन निधि में न्यूनतम एक हजार रुपये भेंट करने वाले महानुभावों के रंगीन चित्र 'सत्यार्थ प्रकाश' के अंत में प्रकाशित किये जाएंगे।

।। योजना में सम्मिलित होने की शर्तें ।।

- सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन के इस महायज्ञ में आप भी अपनी आस्थाओं की पावन आहुतियाँ भेंट कर सकते हैं। कोई भी महानुभाव कम से कम रु0 500/- तथा इससे अधिक लाखों तक भेंट करके इस मिशन को गति प्रदान कर सकते हैं। न्यूनतम 1000/- रुपये या अधिक राशि भेंट करने पर सत्यार्थ प्रकाश की उतनी ही प्रतियों में उन महानुभावों के चित्र भी छपेंगे।
- प्रत्येक आर्यसमाज न्यूनतम रु0 3100/- भेंट कर सकता है। रु0 3100/- की राशि भेंट करने वाले आर्यसमाजों के प्रधान, मंत्री व कोषाध्यक्ष के रंगीन चित्र सत्यार्थ प्रकाश के अंत में 1000 प्रतियों में प्रकाशित होंगे तथा उन आर्यसमाजों को सत्यार्थ प्रकाश की 31 प्रतियां इस सात्विक राशि के उपलक्ष्य में भेंट की जाएंगी। आर्यसमाज इन प्रतियों को अपने सदस्यों के घर-घर तक पहुंचा सकता है।
- सभी महानुभाओं को उनके द्वारा भेंट की गयी धनराशि के बराबर मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश निशुल्क भेंट किए जाएंगे, अर्थात् यदि आपने रुपये 1,00,000/- (एक लाख रु0) भेंट किये हैं, तो आपको सत्यार्थ प्रकाश की 1000 प्रतियां, अथवा रु. 51,000/- (इक्यावन हजार रुपये) भेंट किये हैं, तो 510 प्रतियाँ निःशुल्क भेंट की जाएंगी अथवा रु. 5100/-, 3100/-, 2100/-, 1100/- या 500/- की राशि भेंट करने पर सत्यार्थ प्रकाश की क्रमशः 51, 31, 21, 11 व 05 प्रतियां भेंट की जाएंगी। इस प्रकार आप जितनी धनराशि प्रदान करेंगे, उतने ही मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश आपको भेंट किए जाएंगे।
- सभी महानुभाओं के रंगीन फोटो तथा नाम 'सत्यार्थ प्रकाश' के अन्त में उनकी धनराशि के अनुसार **'सत्यार्थप्रकाश निधि में सहयोगी दानदाता-महानुभाव'** शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशित किये जाएंगे, साथ ही, उन सभी महानुभावों के रंगीन चित्र 'आर्यावर्त केसरी' में भी 'सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि' स्तंभ के अन्तर्गत नियमित रूप से प्रकाशित किये जाएंगे। इस प्रकार आपके पावन सहयोग की कीर्ति विश्व भर में कहीं भी गुंजायमान हो सकेगी।

: प्रकाशन की विशेषताएं :

1. पुस्तक का आकार 20 X 30 का 8वां भाग
2. कागज की क्वालिटी 80 GSM कम्पनी पैक
3. सजिल्द, उत्तम व आकर्षक कलेवर
4. फोन्ट साइज 18 प्वाइंट (सभी आयुवर्ग के महानुभावों द्वारा सुगमतापूर्वक पठनीय)
5. सत्यार्थ प्रकाश के आवरण पृष्ठ के अन्दर 'प्रेमोपहार' की एक पट्टिका रहेगी, जिसका उपयोग किसी को उपहार स्वरूप निःशुल्क भेंट करने के लिए किया जा सकेगा। उस पट्टिका पर पाने वाले तथा भेंटकर्ता के नाम व पते के लिए स्थान रिक्त रहेगा।
6. 'सत्यार्थप्रकाश के अंत में इस ग्रन्थ व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से जुड़ी ऐतिहासिक विरासतों के रंगीन चित्र भी प्रकाशित होंगे, जैसे- ■ महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि, बोधप्राप्ति स्थल; शिवालय व अन्य सम्बन्धित स्थलों के चित्र- टंकारा। ■ महर्षि दयानन्द दीक्षास्थली- मथुरा। ■ आर्य समाज- कांकरवाड़ी, मुम्बई। ■ पाखण्डखण्डिनी पताका स्थली (वैदिक मोहन आश्रम), हरिद्वार ■ राजा जयकिशनदास की कोठी, मुरादाबाद ■ नवलखा महल, उदयपुर ■ वैदिक यंत्रालय, अजमेर ■ महाराजा जोधपुर का महल, जोधपुर ■ महर्षि दयानन्द निर्वाण स्थली, भिनाय कोठी, अजमेर आदि के चित्र।
7. 'सत्यार्थप्रकाश' की पृष्ठ संख्या लगभग पांच सौ होगी तथा इस ग्रन्थ के प्रकाशन का लागत मूल्य लगभग रु0 100/- प्रति ग्रन्थ होगा।

उपर्युक्त के सन्दर्भ में आपके बहुमूल्य सुझावों का हार्दिक स्वागत है।

: सभी आर्य बन्धुओं से सादर निवेदन :

■ प्रत्येक आर्य समाज व आर्य परिवारों के घर पर 'सत्यार्थ प्रकाश' होना चाहिए, ताकि हमारे बच्चे भी सरलतापूर्वक महर्षि की विचारधारा से परिचित हो सकें। ■ शुभ विवाहों, जन्मोत्सवों, वैवाहिक वर्षगांठों, सेवानिवृत्ति, उद्घाटन, शिलान्यास व ऐसे ही अन्य अवसरों पर पुरस्कारस्वरूप 'सत्यार्थप्रकाश' भेंट करें। ■ विविध प्रतियोगिताओं व कार्यक्रमों के माध्यम से 'सत्यार्थप्रकाश' घर-घर पहुंचाएं तथा विभिन्न संस्थानों, स्कूल-कालेजों व पुस्तकालयों को अपनी ओर से 'सत्यार्थप्रकाश' निःशुल्क अथवा सशुल्क भेंट करें।

: अनुरोध :

- ➔ कृपया 'सत्यार्थ प्रकाश' की प्रतियों के अपने ऑर्डर्स अभी से बुक कराकर इस प्रकाशन महायज्ञ में अपनी ओर से पावन आहुति प्रदान करें।
- ➔ कृपया अपना ऑर्डर निम्न पते पर भेजें तथा सहयोग/ राशि भी इसी पते पर भेजकर ऋषि दयानन्द के अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' को जन-जन तक पहुंचाने का पुण्य कार्य करें/ करवाएं। सहयोग राशि 'आर्यावर्त केसरी' अमरोहा के नाम से भारतीय स्टेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता सं0 30404724002 अथवा सिंडिकेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता संख्या : 88222200014649 में भी सीधे जमा करायी जा सकती है। इसकी सूचना पत्र अथवा चलभाष द्वारा हमें अवश्य दें। ताकि यथासमय पावती रसीद आपकी सेवा में प्रेषित की जा सके। धन्यवाद,

: विशेष :
कोई भी धनराशि अग्रिम भेजना ही आवश्यक नहीं है, यदि आप चाहें तो यह राशि इस ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी भेज सकते हैं। आपकी घोषित धनराशि के अनुरूप उतनी ही प्रतियों में आपके चित्र व नाम प्रकाशित कर दिये जाएंगे। धन्यवाद

पता- 'सत्यार्थ प्रकाश' प्रकाशन निधि (द्वारा - डॉ. अशोक कुमार आर्य)

आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, निकट श्रीराम पब्लिक इण्टर कालेज, अमरोहा-244221

Ph. : 05922-262033, 09412139333, 09758833783, E-mail : aryawartkesari@gmail.com

सामवेद अथर्ववेद

अच्छा समय

चुनाव के दौरान भाजपा ने जो प्रचार किया था कि मोदी सरकार आएगी तो अच्छे दिन आएंगे, परन्तु मोदी सरकार अब अस्तित्व में आ चुकी है। अब आते ही अच्छा समय लाने के वादे पर अमल होना चाहिए। प्रश्न है कि अच्छे दिन किसके लिए हैं। भारत में अच्छे लोग पूंजीपति, कारपोरेट, जमाखोर, दलाल और सटोरिए हैं, जिनके लिए अच्छे दिन हैं। जब अधिक धन आएगा, तभी अधिक धन खर्च होगा तथा दलालों को कमीशन के रूप में अधिक फायदा होगा। जमाखोर अपने गोदामों से लाखों टन चीनी का स्टाक भरे बैठे हैं, और लोग बाहर से आने वाली महंगी चीनी खरीद रहे हैं। मिल मालिकों और जमाखोरों का भला कैसे होगा। वह तभी होगा, जब उनकी चीनी पर उनको बाजार में अधिक दाम मिलें। अधिक दाम तभी मिल सकते हैं, जब बाहर से आने वाली सस्ती चीनी पर उनको बाजार में अधिक दाम मिलें और इम्पोर्ट ड्यूटी बढ़ाकर दाम बहुत अधिक कर दिये जाएं। सरकार ने अपने अधिकार का सदुपयोग कर ड्यूटी २५ प्रतिशत बढ़ा दी। अब कैसे भी करके बाहर से आने वाली चीनी सस्ती नहीं पड़ सकती और जनता को मिल मालिकों और जमाखोरों द्वारा स्टाक की गयी चीनी को महंगे दाम पर खरीदने के लिए विवश होना पड़ेगा। दलील दी जा रही है कि यह गन्ना किसानों के हित में किया जा रहा है, ताकि मिल मालिक अपनी चीनी बेचकर किसानों का भुगतान कर सकें। क्या यही नैतिकता है? किसानों का पैसा उस दर पर दिये गये गन्ने का है, जब चीनी बनना शुरु होने वाली थी। मिल मालिकों को तभी उनका भुगतान कर देना चाहिए था, जो उन्होंने नहीं किया। देश की शुगर लाबी सशक्त है और वह सरकार को वह सब करने को विवश करती है, जो उनके हित में हो। दलाल जनता और किसानों का पैसा रोककर अपना पैसा बनाने में लगे रहते हैं। अब सरकार एक तरफ चीनी महंगा करने का उपक्रम कर रही है और दूसरी तरफ दलालों को बहुत रुपया बिना ब्याज के दिया जा रहा है। सरकार मोदी की है और फैसले भी उनके हैं। परन्तु उनमें फैसलों का बचाव करने का साहस नहीं है। कह रहे हैं कि यह तो पिछली सरकार के रुके हुए फैसले हैं, जिन्हें अब लागू किया जा रहा है। अब जब गैस के दाम बढ़ाए जाएंगे, तो भी कहा जाएगा कि यह तो पिछली सरकार के फैसले थे, जो अब लागू किये जा रहे हैं। अगर ऐसा ही है, तो मोदी सरकार के अपने फैसले क्या हैं? 100 दिनों तक महंगाई बढ़ाना या महंगाई रोकना। मोदी जी स्वयं जिन बातों के लिए यूपीए सरकार का विरोध करते थे। आज उसी राह स्वयं चल रहे हैं। क्या यही अच्छे दिनों की झलक है। मोदी जी देशवासी सब देखते हैं, सबको देखते हैं, आपको भी देख रहे हैं।

अतिथि सम्पादकीय- अतुल कुमार शुक्ला, मुरादाबाद

पर्यावरण का करें संरक्षण

समस्त पर्यावरण प्रेमियों से निवेदन है कि आगामी वर्षा ऋतु में यथासम्भव पीपल, बरगद, नीम, जामुन, आम के वृक्षों का ही रोपण करें। पीपल, बरगद, नीम, जामुन, आम आदि वृक्ष सदियों तक हमें शीतल छाया प्रदान करते हैं, शुद्ध ऑक्सीजन के साथ-साथ यह वृक्ष हमारी धरती के श्रेष्ठ आभूषण हैं। दादा ले पोता बरते। यह उल्लेखनीय है कि समस्त आर्य प्रेमी सदैव पर्यावरण की रक्षा को तत्पर रहते हैं। साप्ताहिक यज्ञ में हवन में आहुति देते समय ईश्वर से कामना करते हैं कि हमारे जीवन को समस्त व्याधियों से दूर रखें। इसलिए वट वृक्षों को हम प्रमुख महत्व देते हैं। समस्त सामाजिक स्कूल प्रबन्धन से अपील है कि वृक्षारोपण में केवल पीपल, बरगद, जामुन, आम, नीम के पौधों का ही रोपण करें। पौधे कम से कम तीन वर्ष की आयु प्राप्त कर चुके तब तक के लिए पौधों की रक्षा कवच भी बनाएं।

-कृष्णमोहन गोयल, अमरोहा

॥ ओ३म् ॥

त्रिवन्धुरेण ऋता सुरेशसा रथेना यातमश्विना।
कण्वासो वां ब्रह्म कृण्वन्त्यध्वेत तेषां सु श्रृणुतं हवम्॥

-ऋग्वेद 1/47/२

प्रस्तुत वेदमंत्र में प्राण साधना से जीवन को यज्ञमय बनाने की प्रेरणा की गयी है। प्राण साधना से शरीर रूप रथ में इन्द्रियां (घोड़े), मन (लगाम), बुद्धि (सारथी) तीनों सुन्दर बनते हैं। मानस वृत्ति धर्मपूर्वक धन कमाने व उत्तम आनन्दों को प्राप्त करने की बनी रहती है, जिससे नीरोगता और उत्तम स्वास्थ्य से शरीर सुन्दर बना रहता है। मेधावी व्यक्ति प्रणाधान की महिमा गायन करते हुए उनकी साधना में प्रवृत्त होते हैं। परमात्मा ऐसे उपासकों के जीवनों को यज्ञमय बनाने में सहायक होते हैं। हम शरीर रक्षण- पोषण के लिए कोई क्रूर व अनुचित कर्म न करें। प्राणसाधना से जीवन को यज्ञमय बनाएं। अपव्यय व फैशनपरस्ती क्षुद्रता है।

मैं कैसा मरण चाहता हूँ

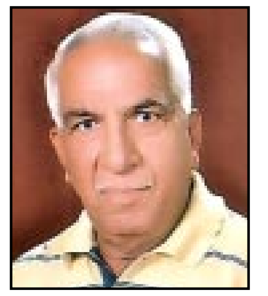

अभिमन्यु कुमार खुल्लर

लोग कहते है कि मरना कोई नहीं चाहता। हाथ-पैरों से लाचार अंगविहीन, अंधत्व का जन्म से शिकार, भीषण रोगों से ग्रस्त किसी भी मनुष्य से पूछिए कि क्या वह मरना चाहता है? उत्तर 'न' में ही मिलेगा। उसे भी मालूम है कि एक न एक दिन मरना पड़ेगा। फिर भी वह अतीव पीड़ा-कष्ट भोगकर भी क्यों जीना चाहता है? यह अद्भुत पहेली है और मैं, जिसके सब अंग प्रत्यंग 76 वर्ष की आयु में शिथिल हो गये हैं, पर सुचारु रूप से कार्यरत हैं, अपनी मृत्यु की प्लानिंग करना चाहता हूँ। शायद अब बहुत देर हो गयी है।

संत प्रवर तुलसीदास जी कह गये हैं- हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश विधि हाथ। अगर ईश्वर जीवन-मरण, अपने पास नहीं रखता, तो कोई उसे मानता ही नहीं। जीवात्मा के पास कर्म करने में स्वतंत्र, अनादि आत्मा तो है, पर शरीर तो परमात्मा द्वारा निर्मित है। जिसने दिया है, उसे लेने का भी पूरा-पूरा अधिकार है, यह मानना होगा। उसके द्वारा जीवन देने और लेने की प्रक्रिया एक बड़ी विचित्र, कठिन और आंशिक रूप से सुलझी हुई पहेली है। वेदवेत्ता इस प्रक्रिया को कर्मफल की संज्ञा देते हैं। यह अत्यंत पेचीदा प्रश्न है, इसलिए फिलहाल यहीं छोड़ता हूँ। मुझे तो मरण-मृत्यु के विचार ने जकड़ रखा है।

जून २013 में अलकनन्दा द्वारा केदारनाथ मंदिर व उसके चारों ओर एक बड़े भूभाग में भयंकर बाढ़ व भूस्खलन ने हजारों भक्तों-अभक्तों को लील लिया। वे बह गये या मिट्टी में दब गये। मन्दिर में गर्भगृह मे जहां देवता विराजमान थे, लाशों व मलबे का अम्बार लग गया। मैं 'आशा के विपरीत आशा' रख रहा था कि अब तो मूर्तिपूजक हिन्दुओं को संदेह से परे, विश्वास हो गया होगा कि जो जाग्रत देवता स्वयं अपने को नहीं बचा सका, वह उनका कल्याण, उनकी मनोकामना की पूर्ति, उनको पाप से मुक्ति व जन्म-मरण से मुक्ति कैसे दिला पाएगा?

नहीं, मैं नहीं चाहूंगा कि केदारनाथ के गर्भगृह में, देवता के समक्ष मिट्टी में पड़ा मिलूं। मुझे केदारनाथ के दर्शन का पुण्य नहीं चाहिए। समझदार लोग केदारनाथ ही नहीं, सोमनाथ, मथुरा और काशी-विश्वनाथ आदि के मन्दिरों के विध्वंस और पुनर्निर्माण की कथा अच्छी तरह जानते हैं। ये सब पूजा स्थल निरीह, गरीब, अशिक्षित, धर्मभीरू हिन्दुओं के ही नहीं, पूर्ण सम्पन्न, अति सम्पन्न, बौद्धिक रूप से अत्यंत प्रबुद्ध हिन्दू भक्तों के आस्था-स्थल पूर्णतया व्यापारिक केन्द्र हैं। यह ऐसा व्यापार है, जिसमें बिना विशेष इनवेस्टमेंट करें (पूंजी लगाएं), लाभ ही लाभ है, हानि की तो मीलों तक कोई संभावना ही नहीं।

२5 दिसम्बर २013 से 01 जनवरी २014 तक नासिक (महाराष्ट्र) के समीप स्थित शिरडी साई बाबा के मन्दिर में 17 करोड़ का चढ़ावा आया। प्रत्येक वर्ष गणेश चतुर्थी के पर्व पर मुम्बई के लालबाग के राजा व सिद्धिविनायक मन्दिर में करोड़ों का चढ़ावा आता है। वैष्णोदेवी, तिरुपति के बालाजी आदि की बात नहीं कर रहा हूं। पुट्टपार्थी के सत्यसाईं बाबा के आकस्मिक निधन (स्वघोषित मृत्युतिथि से पूर्व) के पश्चात् उनके व्यक्तिगत कमरे से करोड़ों का कैश, स्वर्ण आदि मिला था। मैं समझना चाहता हूं कि क्या केदारनाथ मन्दिर का शिव (ईश्वर) इन सब मन्दिरों के ईश्वरों से कम शक्तिशाली, कम प्रभावकारी था? प्राकृतिक तबाही में जब वह स्वयं न बच सका और न ही अपने हजारों भक्तों को बचा सका तो क्या गारण्टी है कि ऐसी ही किसी भीषण त्रासदी में इन मन्दिरों के भगवान अपने-अपने भक्तों को बचा पाएंगे? नहीं, नहीं मैं इनकी शरण में जाने पर, ऐसी ही किसी भीषण दुर्घटना में मरना नहीं चाहूंगा। मुझे दुर्घटना में अकस्मात् हुई मौत भी नहीं चाहिए। आजकल सम्पन्न वृद्धों को भी अकेले ही बुढ़ापा झेलना पड़ता है। ये ही आजकल लोभी, लुटेरों के आसान टारगेट बने हुए हैं। बड़ी बेरहमी से इनकी हत्या की जाती है, लूटपाट की जाती है। हमारी भी यही स्थिति है। रात को बाथरूम जाते हुए अनेक बार ख्याल हो आता है कि क्या हम भी इसी निर्मम पीड़ादायक मृत्यु के शिकार तो नहीं होंगे?

प्रश्न यह उठता है कि क्या मैं या अन्य कोई व्यक्ति मौत का चुनाव कर सकते हैं? शत-प्रतिशत सही उत्तर जीवात्मा के पास नहीं, परमात्मा के पास मिलना चाहिए, क्योंकि जीवन-मरण उसके हाथ में है। ऋषि-मुनियों ने वर्षों कड़ी तपस्या की, साधना की और परमात्मा से पूछा- हे प्रभु! ज्ञान-विज्ञान, मनुष्य के कल्याण के सब रास्ते तो आपने बता दिये, जीवन-मरण के प्रश्न को भी हल कर लीजिए। प्रभु ने कहा- देख और समझ। संसार के समस्त प्राणियों की रचना का कारण मैं हूं। आत्मा को मानव का चोला भी मैंने ही दिया है। अन्य जीवधारियों की आत्मा को सामान्य बना दिया, परन्तु बुद्धि-विवेक नहीं दी। मानव को ही बुद्धि ज्ञान-विवेक और कर्म की स्वतंत्रता प्रदान कर दी। लगभग अपनी समस्त शक्तियों का उपभोग करने का रास्ता दिखा दिया, पर जीवन-मरण अपने हाथ में रखा, क्योंकि मुझे मालूम था कि मानव नाम का यह प्राणी बुद्धि और स्वतंत्रता दोनों का ही दुरुपयोग अधिक और सदुपयोग कम करेगा। मनुर्भव के उपदेश को वह अनसुना ही करेगा।

देखो न, जिस व्यक्ति ने जीवन में उन्नति करने में दूसरों का अहित नहीं किया। भयंकर विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य को छोड़कर कोई कुटिल मार्ग नहीं अपनाया। यदि जीवन में उसकी सफलता चमत्कारिक नहीं रही, फिर भी यह पूर्णतया संतुष्ट होकर जीवनयापन करता रहा, निष्ठावान रहा। आत्मिक सुख और शांति उसकी जीवन संगिनी बनी रही। ऐसा ही व्यक्ति सार्थक जीता है और ऐसा ही व्यक्ति 'जीवेम शरदः शतम्' की प्रार्थना करने का हक रखता है और उसे ही प्रभु शांतिपूर्वक मृत्यु की महानिद्रा को सौंप देता है। ऐसे व्यक्ति का निर्माण किया जाता है, अपने आप नहीं बनता। उसे बचपन से ही नहीं, वरन् गर्भाधान से ही संस्कारवान बनाया जाता है। उसे शतपथ पर चलने की प्रेरणा, योग्यता और सामर्थ्य प्रदान किया जताा है। सौ वर्ष के लम्बे जीवनकाल में अथवा जितने वर्षों का उसको जीवन मिला हो, समस्त झंझावातों को झेलकर जब वह जीवन के अवसान की ओर बढ़ता है, तब उसे पूर्णता का सुख मिलता है और शांति की मृत्यु मिलती है। सोते-सोते, बात करते-करते प्राण पखेरू उड़ जाते हैं। लोग कहते हैं कि एक भला आदमी चला गया। मेरी मां और बाऊजी तथा परिवार के दो-तीन सदस्य इसी तरह अलविदा हुए। हे प्रभु! मुझे भी ऐसा ही मरण देना।

-२२, नगर निगम क्वार्टर्स,
जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर
फोन : 0751-२४२5931

शीघ्र प्रकाशित हो रहे हैं
आर्यावर्त केसरी के
आगामी विशेषांक

(1) आर्यजगत के कवि विशेषांक
(२) आर्यजगत के दर्शनीय ऐतिहासिक स्थल विशेषांक
(3) आर्यजगत द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्प विशेषांक तथा ऐसे ही अन्य अनेक विशेषांक...

भारत-बांग्लादेश सम्बन्ध

अतुल कुमार शुक्ला, लाइनपार, मुरादाबाद

पड़ौसी देशों से संबन्ध मधुर करने का जो संकेत प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने शपथ ग्रहण समारोह में दिया था, वह धीरे-धीरे रंग पकड़ रहा है। कुर्सी संभालने के बाद मोदी ने अपनी विदेश यात्रा की शुरुआत भूटान से की थी, जिसमें विदेश मंत्री सुषमा स्वराज भी उनके साथ थीं। सुषमा ने अब स्वतंत्र तौर पर पहली विदेश यात्रा के लिए बांग्लादेश को चुनकर इस प्रक्रिया को और तेज करने का संकेत दे दिया है। विडंबना है कि बांग्लादेश को पाकिस्तान से आजादी दिलाने में मुख्य भूमिका निभाने के बावजूद दस देश से हमारे रिश्ते अपेक्षित रूप से प्रगाढ़ नहीं बन पाये हैं। प्रधानमंत्री शेख हसीना की सरकार के जमाने में बेशक यह रिश्ता मजबूत हुआ है, लेकिन मंजिल अब भी कोसों दूर है। श्रीमती स्वराज की यात्रा इस मंजिल को नजदीक लाने में यकीनन कामयाब होगी। पाकिस्तान भले ही हमारे जेहन पर हमेशा छाया रहता हो, लेकिन इस तथ्य को भी याद रखना चाहिए कि पाक की तुलना में बांग्लादेश से जुड़ी हमारी सीमा का आकार कहीं अधिक बड़ा है। इतना ही नहीं, बांग्लादेश अगर हमें रास्ता देता है, तो अपने नॉर्थ-ईस्ट राज्यों तक पहुंच बनाना हमारे लिए अधिक आसान हो जाएगा। नदी-नालों से भरपूर बांग्लादेश के सहयोग से जल-बिजली परियोजनाएं और सिंचाई तथा पेयजल के लिए पानी का बेहतर इस्तेमाल किया जा सकता है, और उन अराजक तत्वों पर लगाम लगायी जा सकती है, जो उसकी जमीन से हमारे नार्थ-ईस्ट राज्यों में गड़बड़ी फैलाने की साजिशों में जुटे रहते हैं। इससे पूर्व की मनमोहन सिंह सरकार ने बांग्लादेश से संबन्ध सुधारने की पहल तो की थी, लेकिन गठबन्धन की मजबूरियों ने इसे परवान नहीं चढ़ने दिया। सीमा समझौता और तीस्ता नदी जल बंटवारा दोनों देशों के बीच सबसे संवेदनशील मसले हैं, जिनके समाधान के रास्ते में पश्चिम बंगाल की ममता बनर्जी सरकार अवरोध बन गयी थी। बांग्लादेशी घुसपैठियों का मुद्दा भी दोनों देशों के बीच तनाव की बड़ी वजह है, और नरेन्द्र मोदी ने चुनाव प्रचार के दौरान इसका बार-बार उल्लेख भी किया था। इसके अलावा बांग्लादेश की उस इच्छाशक्ति को पूरा करने में हम नाकाम रहे, जिसमें वहां के लोगों के लिए वीजा प्रक्रिया को सरल बनाने की बात थी। इन तमाम विसंगतियों के बावजूद बांग्लादेश से रिश्ते मधुर करने के तमाम मौके मौजूद हैं, बशर्ते इनके लिए ठोस इच्छाशक्ति नेताओं में दिखे। ध्यान रखना होगा कि चीन जोरदार तरीके से बांग्लादेश में अपना प्रभाव बढ़ाने में जुटा है, और यह भारत के लिए खतरनाक संदेश है।

हिन्दी दिवस : 14 सितम्बर २014

1. 65 वर्ष पूर्व हिन्दी को सर्वसम्मति से स्वतंत्र भारत की राष्ट्रभाषा स्वीकृत तो किया गया, किंतु वास्तव में इसे उचित महत्व नहीं दिया गया।
२. जून २014 में राजग की मोदी सरकार के केन्द्रीय मंत्रियों को मोदी जी ने निर्देश दिया कि सरकारी कार्य अधिक से अधिक हिन्दी में किया जाए।
3. वर्धा (महाराष्ट्र) में 1997 से महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय चल रहा है।
4. रूस में मास्को और सेन्ट पीट्सवर्ग में वहां की सरकार ने एक-एक हिन्दी विश्वविद्यालय भी स्थापित किया है।
5. सम्पूर्ण विश्व में हिन्दी सिखाने की सर्वोत्तम सुविधाएं रूस में ही हैं।
6. हिन्दी संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषाओं में भी सम्मिलित होने की सबल स्थिति में है।
7. विश्व के 33 देशों के 1२7 विश्वविद्यालय आज इसे स्वेच्छापूर्वक अपना रहे हैं।
8. हिन्दी के प्रति उपेक्षा का भाव हिन्दी भाषी राज्यों में ही कहीं ज्यादा है, जो तालिका से स्पष्ट है- इस दशा को देखते हुए हम सभी हिन्दी संस्थाओं से मांग करते हैं कि वे सभी हिन्दी भाषी सरकारों से ज्ञापन देकर मांग करें कि सभी विश्वविद्यालयों में हिन्दी विभाग खोलना अनिवार्य करें, क्योंकि इस समय 191 विश्वविद्यालय हैं, किंतु हिन्दी विभागों की संख्या केवल 103 है। अतः 88 हिन्दी विभाग शीघ्र खोलने के लिए निर्देश दिये जाएं अथवा कानून बनाकर उन्हें बाध्य किया जाए।

राज्य	कुल विश्वविद्यालय	हिन्दी विभागों की संख्या
उत्तर प्रदेश	४२	२०
उत्तराखण्ड	१२	04
मध्यप्रदेश	२६	17
हरियाणा	19	09
हिमाचल प्रदेश	19	10
राजस्थान	48	२४
बिहार	15	१२
झारखण्ड	10	07

9. हिन्दी की शब्द संख्या सात लाख के आसपास है, जबकि अंग्रेजी की शब्दसंख्या केवल ढाई लाख ही है।
10. हिन्दी में जैसा लिखा जाता है, वैसा ही पढ़ा जाता है, जैसे क को क ही पढ़ा जाएगा, लेकिन अंग्रेजी में सी को क और स भी पढ़ा जाता है। अंग्रेजी में ऐसे बहुत शब्द हैं।
11. आज विश्व के 13२ देशों में रह रहे करीब 1२5 करोड़ भारतीय तथा विदेशी लोग भी इसे अपना रहे हैं।
1२. दक्षिणी अफ्रीका में २1 सितम्बर २01२ में नवां विश्व हिन्दी सम्मेलन हुआ था। इसमें 18 भारतीय तथा 30 विदेशी विद्वानों को सम्मानित किया गया था।
13. अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी साहित्य कलामंच, मुरादाबाद भी विदेशों में हिन्दी सम्मेलन करती है।
14. हिन्दी प्रचार वाणी मासिक पत्रिका बेंगलूर में छपती है और दक्षिण भारत में 1979 से हिन्दी का प्रचार-प्रसार कर रही है।
15. तमिलनाडु हिन्दी का विरोधी राज्य है। उसकी राजधानी चेन्नई में 15000 हिन्दीभाषी मतदाता हैं। अप्रैल-मई २014 के लोकसभा चुनावों में तमिल समर्थक पार्टियों ने भी हिन्दी भाषियों को लुभाने के लिए हिन्दी में प्रचारपत्रक छपवाये थे।

आई0डी0 गुलाटी- संस्थापक एवं राजेश गोयल- अतिरिक्त महामंत्री (IV), सावरकरवाद प्रचार सभा, बुलन्दशहर (उ.प्र.) मो0 : 08958778443

कृपया प्रतिक्रिया भेजें

सम्मानित पाठकों से अनुरोध है कि आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित समाचारों व आलेखों के विषय में समय-समय पर अपनी प्रतिक्रियाओं से अवगत कराते रहें। धन्यवाद,

सम्पादक- आर्यावर्त केसरी आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा चल.- 09758833783 / 08273236003

लेखकों से निवेदन

लेखक महानुभावों से निवेदन है कि कृपया अपने लेख आदि पेपर की एक साईड में व स्पष्ट लेखनी में भेजें। यह भी ध्यान रखें कि लेख ज्यादा बड़ा न हो। धन्यवाद -सम्पादक

. आर्यावर्त केसरी राष्ट्र का सजग प्रहरी है यह प्रत्येक देशवासी की आवाज है, इसलिए इसे सभी पढ़ें और आगे बढ़ें।
. आओ, सभी देशवासी मिलकर राष्ट्रीय विकास के लिए संकल्पित हों

आर्यो! महर्षि दयानन्द का कहना मानो

वैदिक धर्म अपनाओ- आर्यसमाज बचाओ

अश्विनी कुमार पाठक

मैंने आर्यसमाज के कई विद्वानों से यह प्रश्न पूछा कि संसार में वैदिक धर्म का कहीं अस्तित्व है? इस प्रश्न का संतोषजनक उत्तर कोई भी विद्वान दे नहीं सका। हम लोग आर्यसमाज के सत्संगों तथा अन्य उत्सवों पर वैदिक धर्म की जय के उद्घोष खूब लगाते हैं, परन्तु सरकारी कागज-पत्रों में धर्म के खाने में हिन्दू ही लिखते-लिखाते हैं, जो कि कोई धर्म ही नहीं है, क्योंकि हिन्दू धर्म की कोई धर्म ही नहीं है। क्योंकि हिन्दू धर्म की कोई परिभाषा करना ही कठिन है। हिन्दुओं में अलग-अलग विचारधारा के लोग हैं। इनका कोई एक धार्मिक सिद्धांत नहीं है। कोई इश्वर को मानता है, कोई नहीं मानता। कोई ईश्वर को निराकार मानता है, और कोई साकार मानकर मूर्तिपूजा करता है। कोई मांसाहार पाप समझता है और कोई अपने देवी-देवताओं को भी शराब, मांस का भोग लगाता है। इसलिए कौन ठीक है और कौन गलत? हिन्दुओं का निश्चय करना ही कठिन है। आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी ने वेद के अनुसार हमारा धर्म वैदिक धर्म बताया था और यह कहा था कि हमारा प्राचीन नाम आर्य है, हिन्दू नहीं। क्योंकि यह नाम हमारे किसी भी धर्मग्रन्थ में नहीं लिखा। उन्होंने 31 दिसम्बर 1880 ई0 को आर्यसमाज मुल्तान के मंत्री मास्टर दयाराम वर्मा को एक पत्र में लिखा था कि जनगणना में सब लोग धर्म के खाने में आर्य लिखाएं, परन्तु अर्यासमाज के नेताओं ने इस ओर विशेष ध्यान नहीं दिया, जबकि इस बात का खूब प्रचार होना चाहिए था। ऐसा न होने के कारण आर्यसमाज के अधिकांश लोग धर्म के खाने में हिन्दू ही लिखाते जा रहे हैं। इसलिए हमारे परिवार भी वैदिक धर्म नहीं बन सके। देखने में आया है कि ज्यादा परिवार आर्यसमाजी अथवा वैदिकधर्मी नहीं है। आखिर किस-किस का नाम लिया जाए। हमारे कई बड़े-बड़े स्वर्गवासी नेताओं के परिवार भी आज आर्यसमाजी नहीं हैं। अगर हमारे परिवारों में वैदिक धर्म को मान्यता दी जाती, तो इमारे परिवार वैदिक धर्मी ही कहलाते और आर्यसमाज के सत्संगों से वह दूर न रहते। आर्यसमाज के पुराने सदस्य दिवंगत हो रहे हैं और नये बन नहीं रहे हैं। इस तरह आर्य समाज कब तक चलेगा? इसलिए जब तक वैदिक धर्म, पारिवारिक धर्म नहीं बनेगा, तब तक आर्यसमाज प्रगति नहीं कर सकता। वेदप्रचार की भी ठोस योजना बननी चाहिए। किसी से डरना नहीं चाहिए।

पौराणिक सनातन धर्म का प्रचार तो अपने आप ही परिवार की महिलाओं द्वारा हो रहा है, जबकि आर्य समाजियों की पत्नियां कोई तो राधास्वामी गुरु को और कोई ब्रह्माकुमारी मत अथवा पौराणिक पूजा-पाठ में लगी हुई हैं और कभी-कभी आर्यसमाज के हवन आदि के कार्यक्रमों में आ जाती हैं। इसलिए हमारी सन्तानें भी दुविधा में रहती हैं कि कौन ठीक और कौन गलत है। आर्य नेता इस बारे में विचार करें तथा वैदिक धर्म सभी कागज पत्रों में लिखने-लिखाने का प्रचार करें, तभी वैदिक धर्म अस्तित्व में आ पायेगा। हिन्दुस्तान के नागरिक हैं, इसलिए हम हिन्दू कहला सकते हैं। इसलिए हिन्दू समाज के अंग हैं। एक आर्यसमाज ही ऐसी संस्था है, जिसे हिन्दुओं की चिन्ता है, जो आज तक इनकी रक्षा में प्रयत्नशील रहा है। चाहे कोई माने अथवा न माने, तथाकथित सनातनधर्मी लोग तो पाखण्ड और अंधविश्वास को ही धर्म समझकर बढ़ाते जा रहे हैं। इसलिए आर्य समाज अपने कर्तव्य को पहिचाने और यह प्रचार करता रहे कि हमारे पूर्वज श्रीराम, श्रीकृष्ण आर्य ही थे, न कि हिन्दू। और हम भी गर्व से अपने आप को आर्य कहें, कहलाएं। कवि की ये पंक्तियां याद रखें- ''आर्य हमारा नाम है, वैदिक हमारा धर्म। ओ3म् हमारा ईश है, यह योग हमारा कर्म।। सत्य हमारा लक्ष्य है, गायत्री महामंत्र। भारत हमारा देश है, सदा रहे स्वतंत्र।।''

-सी, २३३, नानकपुरा, नई दिल्ली

भाई तू क्यों नही आया

अग्निवीर

कानों में यकायक उठी बेबस सी सिसकियां
मैंने पलट के देखा तो इक लड़की थी वहाँ
जब गौर से देखा तो आसमान फट गया
जो चल बसी वो मेरी बहन थी खड़ी वहाँ।
देखा तो मुझे दर्द का सैलाब फट पड़ा
आँखों में उसके जुल्म का तूफान फट पड़ा
पूछा जब उसने भाई तू क्यों नहीं आया
गैरों ने देख क्या किया तू क्यों नहीं आया।
वो चोट जिस्म पर लिए चुपचाप खड़ी थी
आखिर में उसे लेने को फिर मौत खड़ी थी।
तन खून से लथपथ था आँचल गिरा लिया
सर उसने मेरी बाँह में अपना छिपा लिया
मंजर ये देख पत्थर दिल भी पिघल गए
सूरज ने भी ये देश खुद को छिपा लिया।
वो बोली क्या राखी हैं बस धागे का एक नाम
क्या बहन की हिफाजत भाई का नहीं काम?
दुशासनों ने फिर से घसीटी है द्रौपदी
क्यों कृष्ण ने बचाया नहीं बहन का सम्मान?
राखी है नाम भाई का बहनों को बचाना
राखी है नाम मर्द का औरत को बचाना
राखी है नाम अजनबी को बहन बनाना।
फिर बहन की रक्षा में जी जान लगाना।
पर यहाँ तो दस्तूर हैं हैवानों के जारी
खुद अपने ही होते हैं कई बार शिकारी
हर एक की जुबां पे हैं माँ बहन की गाली
हर एक जबां गंदी है हर आँख है काली।
हे भाई तू सब बहनों की रक्षा सदा करना
दुशासनों की दुनिया में श्रीकृष्ण तुम बनना
हर द्रौपदी के सर पे अपना हाथ बढ़ाना
मानवता क्या होती है ये दुनिया को दिखाना।
इतना था कहना उसका कि वो मंद हो गई
इस भाई के हाथों में वो विलीन हो गयी
दुनिया के सफर को यहीं पे खत्म कर चली
भगवान की गोदी में कहीं दूर हो चली....।।

जे.पी./पोस्ट बॉक्स नं.- 9655, नई दिल्ली- 110058

पाचन शक्ति बढ़ाता है, अमरूद

भाषणा बंसल

- अमरूद अगर सलाद के रूप में खाया जाये तो यह पाचन शक्ति में वृद्धि करता है।
- अमरूद को भूनकर, इसका सेवन करने से पुरानी खांसी में लाभ होता है।
- पका अमरूद नियमित खाने से पेट साफ होकर भूख में बढ़ोतरी होती है।
- खाना खाने के बाद अमरूद का सेवन किया जाए तो इससे शरीर चुस्त बनता है।
- अमरूद के नियमित सेवन से दांतों में चमक आती है व मसूड़े मजबूत होते हैं।
- यदि मुंह में छाले हो जाएं तो अमरूद की पत्तियां चबाएं।
- अमरूद का सेवन जिगर के रोगियों के लिए अति लाभप्रद है।
- अमरूद का नियमित सेवन किडनी संबंधी रोगों को दूर करता है।
- पानी में अमरूद की पत्तियां उबालकर, उस पानी से गरारे करने से गले के रोगों से निजात मिलती है।
- यह दिल की धड़कन को सामान्य रखता है।
- मुंह से बदबू आती हो, तो अमरूद की पत्तियों की लुगदी बनारक मसूड़ों पर उसकी मालिश करने से लाभ पहुंचता है।
- चूंकि अमरूद में विटामिन सी की मात्रा होती है, इसलिए इसके सेवन से खुजली, अपरस, स्कर्वी, दाद व त्वचा संबन्धी बीमारियों के होने की संभावना नहीं रहती।
- पके अमरूद का सेवन करने से कब्ज दूर होती है।
- अमरूद के नियमित प्रयोग से पेट में कीड़े नहीं रहते।
- कलेजे में जलन हो, तो अमरूद की पत्तियों को पीसकर उबाल लें व उसमें चीनी मिलाएं व छानकर पिएं। इससे जलन दूर होकर राहत मिलेगी।

समाचार न होना (किसान)

ओमप्रकाश अग्रवाल

तू न थकेगा कभी
तू न थमेगा कभी।
आया तूफान बनके
चूड़ियां जो है खनके।।

जी हुजूरी आती नहीं
रूप धमकी भाषा नहीं।
पेट काटता है सदा
दाना चुगाता फर्ज अदा।।

फसल का धोका होता सदा
कर्ज की तलवार है अदा।
बेभाव का बाजार है नंगा
कभी न होने देता चंगा।।

जान लेकर ही क्या छोड़ेगा?
दोस्ती की आड़ में जान लेगा
अखबार का समाचार न होना
मरने से पहले खुदा न होना।।

-शिवाजी चौक,
वर्धा (महाराष्ट्र)
मोबा. : 09421533215

विश्वव्यापी आर्यसमाज के समाचार
आर्यसमाज की आधिकारिक वेबसाइट पर

www.aryasmaj.com

अपनी संस्था की सूचनाएं भी अपलोड कर सकते हैं।
अथवा ईमेल से भेजें : thearyasamaj@gmail.com

मुद्रण/प्रकाशन सुविधा
ट्रैक्ट, लघु पुस्तक, संदर्भ ग्रन्थ, काव्य संग्रह तथा बहुरंगी पैम्फलेट, पोस्टर आदि के प्रकाशन की उचित मूल्य पर सुविधा उपलब्ध।
-व्यवस्थापक, आर्यावर्त प्रिन्टर्स, गोकुल विहार, श्रीराम इं0 कालेज के पीछे, अमरोहा, फोन : (05922–262033/ 09758833783/ 08273236003)

वैदिक साहित्य विक्रय केन्द्र
वेद, उपनिषद, दर्शन व सभी प्रकार के वैदिक-आर्ष, सम-सामयिक साहित्य का विशद भण्डार, ध्वज, फोटो, कैलेण्डर तथा कैसेट आदि बिक्री हेतु उपलब्ध हैं।
रोग विनाशनी - स्वास्थ्य प्रदायिनी
बहुमूल्य जड़ी-बूटियों के योग से निर्मित मेवा मिश्रित
मूल्य ६०/- किलो
शुद्ध हवन सामग्री
हरिश्चन्द्र आर्य अधिष्ठाता - उपदेश विभाग
कार्यालय- काली पगड़ी, अमरोहा (उ.प्र.) फोन : ०५९२२-२६३४१२

प्रभु-भक्ति का आनन्द कब आएगा?

देवराज आर्यमित्र

'भक्ति' भक्त शब्द की भावात्मक संज्ञा है। भक्त का अर्थ है जोड़ना, मिलाना, और इसका विपरीतार्थक शब्द है विभक्त, जिसका अर्थ है भाग करना, पृथक् करना। अतः भक्ति शब्द का आर्थ हुआ मिलन। आप किससे मिलना चाहते हैं अर्थात् किसकी भक्ति करना चाहते हैं? कौन है आपका इष्टदेव या सच्चा साथी, जो सदैव आपकी सहायता करता है और कभी धोखा नहीं देता, जिस पर आपको पूरा भरोसा है। क्या आपके परिवार में या रिश्तेदारों में या कोई मित्र ऐसा है, जो विपत्ति में हर समय निःस्वार्थ भाव से आपका साथ देने को तैयार हो। यदि आपको अपने किसी जीवन साथी पर गर्व है, तो आप बड़े सौभाग्यशाली हैं। मैंने अपने जीवन में जो अनुभव प्राप्त किया है, उसके अनुसार प्यारे प्रभु के अतिरिक्त और कोई विश्वसनीय सहायक नहीं है। परमपिता परमात्मा के जितने उपकार हैं, उनका वर्णन नहीं किया जा सकता। उनका जितना धन्यवाद किया जाए, थोड़ा है। उनकी भक्ति का रसानन्द वही प्राप्त कर सकता है, जो उसका सच्चा भक्त होता है।

भक्ति के मार्ग पर चलने के लिए भक्ति के दो अंगों का सशक्त होना आवश्यक है। पहला अंग है ज्ञान रूपी चक्षु, और दूसरा अंग है श्रद्धा रूपी पांव अर्थात् ज्ञान के बिना भक्ति अंधी है और श्रद्धा के बिना पंगु (लंगड़ी) है। पौराणिक भक्तों में श्रद्धा तो है, परन्तु अंधी है। अन्धविश्वास के कारण भेड़चाल चल रहे हैं, भटक रहे हैं, धक्के खा रहे हैं, कहीं शांति प्राप्त नहीं हो रही है। आर्यसमाजी भक्तों में कुछ ज्ञान है। वह लंगड़ा है अर्थात् श्रद्धा नहीं है। जब तक अंधे और लंगड़े में एकता नहीं होगी, तब तक मार्ग पर चलना ही कठिन है।

भक्ति करने के लिए पहले व्रत धारण करना होगा। व्रत किसे कहते हैं? सारे दिन भूखे रहने का नाम व्रत नहीं है। व्रत का अर्थ है वर लेना अर्थात् प्रतिज्ञा करना। जैसे कोई व्यक्ति किसी कार्य के दुष्परिणाम स्वरूप यह मान लें कि भविष्य में मैं अब ऐसा दुष्कर्म कभी नहीं करूंगा। 'ओ३म् विश्वानि देव' का प्रार्थना मंत्र प्रतिदिन रटते रहो, कोई लाभ नहीं है। जैसे गुड़-गुड़ कहने से जीभ मीठी नहीं होती, जब तक गुड़ को जीभ से चखा न जाए। ऐसे की प्रार्थना करने का लाभ तब होगा, जब मंत्र के अनुसार कार्य करेंगे।

अतः प्यारे प्रभु की भक्ति का रसानन्द प्राप्त करने के लिए अपने को भक्ति के योग्य बनाना होगा अर्थात् अपना आत्मनिरीक्षण करके दुर्गुणों और दुर्व्यसनों को निकालना होगा और प्रभु-भक्ति का प्रसाद ग्रहण करने के लिए मन रूपी पात्र को उज्ज्वल बनाने की आवश्यकता है। अमीचन्द अपनी समस्त बुराइयों को छोड़कर जब सच्चा भक्त बन गया, तब उसे जो आनन्द प्राप्त हुआ, वह लिखता है- "तेरी कृपा से जो आनन्द पाया।/वह वाणी से जाए क्योंकर बताया।।"

आओ हम भी इस आनन्द को प्राप्त करने के लिए जीवन को पवित्र बनाएं। ईश्वर-भक्ति करें।

-डब्ल्यू जैड- 4२8
हरिनगर, नई दिल्ली-64

पाकिस्तान का स्थापना दिवस 14 अगस्त 1947

पाकिस्तान को लाहौर कैसे मिला?

□ २३ मार्च 1940 को मुस्लिम लीग ने लाहौर अधिवेशन में पाकिस्तान बनाने का प्रस्ताव पारित किया।

□ 1941 में जनगणना में लाहौर में मुस्लिम 47 प्रतिशत थे।

□ मुस्लिम लीगी नेताओं ने चतुरता और दूरदर्शिता का परिचय देते हुए लाहौर नगर निगम की सीमा में मुस्लिम बहुल निकटवर्ती कई गांवों को शामिल कर लिया।

□ इन गांवों के शामिल होने पर लाहौर में मुस्लिमों का प्रतिशत 53 हो गया।

□ कांग्रेस की ओर से भारत का पक्ष रखने का अधिकार नेहरू को दिया गया।□ नेहरू को खण्डित भारत में तिरंगा फहराने की बहुत जल्दी थी, इसलिए उन्होंने सीमा निर्धारण आयोग से ढंग से वार्ता ही नहीं की।

□ भारत की ओर से यह कहा गया कि लाहौर की 85 प्रतिशत जमीन-जायदाद के मालिक हिन्दू हैं, इसलिए यह नगर भारत में रहना चाहिए।□ आयोग के अध्यक्ष ने कहा कि उन्हें वे नगर, जिले पाकिस्तान को देने हैं, जहां मुस्लिम 51 प्रतिशत या उससे अधिक हैं।

□ केवल सात प्रतिशत मुस्लिमों ने कांग्रेस को वोट दी थी। लगभग 63 लाख मुस्लिम वोट कांग्रेस को मिले। ये विभाजन के विरोधी थे। इनके हिस्से की जमीन २३ हजार वर्ग मील बैठती है। ये भारत में ही रहना चाहते थे।

□ गांधी, नेहरू ने मन में यह सोच लिया था कि खंडित भारत में मुस्लिमों को भी रखा जाएगा।

□ यदि कांग्रेस की ओर से आयोग को यह कहा जाता कि पाकिस्तान को उन सात प्रतिशत मुस्लिमों के हिस्से की २३ हजार वर्गमील भूमि नहीं दी जाए, जिन्हें बंटवारे के बाद भी खंडित भारत में ही रहना है, तो लाहौर निश्चित रूप से भारत को मिलता।

□ यदि मौलाना आजाद के नेतृत्व में एक ज्ञापन इसी के पक्ष में दे दिया जाता, तो भारत का पक्ष ज्यादा मजबूत हो जाता।

□ हमारी सोच है कि यदि आयोग २३ हजार वर्गमील भूमि पाकिस्तान को कम देने के तर्क को स्वीकार कर लेता, तो पश्चिमी पंजाब के लाहौर, स्यालकोट, ननकाना साहब और सिन्ध के थारपारकर और उमरकोट जिले भी भारत में ही रहते।

□ खेद है कि नेहरू की जल्दबाजी और अदूरदर्शिता के कारण पंजाब का प्रसिद्ध नगर लाहौर भारत में नहीं रहा। इस नगर को भगवान राम के पुत्र लव ने बसाया था। यह आर्यसमाज का गढ़ था। देश की दूसरी आर्यसमाज महर्षि दयानन्द ने अपने हाथों से यहीं बनायी थी।

□ कांग्रेस का बढ़-चढ़ कर समर्थन करने वाले आर्यसमाजी देखते रह गये और लाहौर पाकिस्तान को मिल गया।

□ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा- 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली के कर्मठ नेताओं से अनुरोध है कि वे लाहौर की उस आर्यसमाज का जीर्णोद्धार कराने की कोशिश करें, जिसकी स्थापना महर्षि दयानन्द ने की थी और २018 में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन, लाहौर में कराएं।

आई0डी0 गुलाटी- संस्थापक एवं राजेश गोयल- अतिरिक्त महामंत्री (IV),
सावरकरवाद प्रचार सभा, बुलन्दशहर (उ.प्र.) मो0 : 08958778443

गो हत्या बन्द करो

देश की भाजपा सरकार से नम्र निवेदन है कि देश में गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाया जाए तथा विदेशों में सभी प्रकार के मांस का निर्यात बन्द किया जाए। कृषि विशेषज्ञों के अनुसार देश में श्वेत क्रान्ति के लिए गोहत्या पर प्रतिबन्ध अति आवश्यक है, नहीं तो गाय लुप्त हो जाएगी। यह सर्वविदित है कि विदेशों में गाय के दूध के उत्पादों की मांग व्यापक स्तर पर हो रही है। अतः गाय को संरक्षित करने को हमें सजग और सतर्क होना पड़ेगा। -कृष्णमोहन गोयल, अमरोहा

प्रभु शक्ति एवं सम्पूर्ण ज्ञान के आधार

ऋग्वेद 1/54/२ के मंत्र में प्रभु स्तवन कर शक्ति एवं ज्ञान प्राप्त करने की प्रेरणा की गयी है। प्रभु शक्ति एवं सम्पूर्ण ज्ञान के आधार हैं। प्रभुभक्त उसी प्रकार शक्ति सम्पन्न हो जाता है, जिस प्रकार अग्नि के संपर्क से लौह शलाका। प्रभु स्तवन ही तो जीवन-लक्ष्य का स्तवन कराता है। प्रभु हमारे पृथिवी रूप शरीर को सुदृढ़ करते हैं, तो द्युलोक मस्तिष्क को भी ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर देते हैं। शरीर शक्ति से शोभित हो जाता है तो मस्तिष्क ज्ञान का घर बन जाता है। इस शक्ति और ज्ञान के मंत्र से हमारे सब कष्ट दूर हो जाते हैं। हम प्रातः सायं प्रभु स्तवन कर, शक्ति सम्पन्न बन, जीवन लक्ष्य को प्राप्त करें।

आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा

द्वारा मुद्रित

48 पृष्ठ, रंगीन आवरण, उत्तम कागज युक्त पुस्तक- **अर्चना यज्ञ पद्धति**

प्रकाशक- आर्य उप प्रतिनिधि सभा,
कार्यालय : आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उ0प्र0)
मूल्य- ८ रु. (६०० रु० सैंकड़ा)

आर्यावर्त प्रिंटर्स, अमरोहा द्वारा मुद्रित तथा आर्य उपप्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित एक बहुउपयोगी ट्रैक्ट

हिन्दी के प्रचार-प्रसार में आर्यसमाज का योगदान

अपने आर्यसमाज, स्कूल-कालेज के उत्सवों, विशेष पर्वों, विभिन्न समारोहों में वितरण करने हेतु आज ही मंगाएं।

मूल्य : दो सौ रु० सैंकड़ा

अवश्य पढ़िए— आज ही मंगाईये संग्रहणीय पुस्तकें

□ **रामायण का वास्तविक स्वरूप**

मूल्य- २०/-

□ **यज्ञ और पर्यावरण**

मूल्य : तीन रु०/२०० रु. सैंकड़ा

आज ही मंगाएं

आर्यपर्वों, जन्मदिन, वर्षगांठ, जयन्ती, उद्घाटन, विमोचन आदि के विशेष मंत्रों के साथ दैनिक व विशेष यज्ञ पर सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रमाणित यज्ञ पद्धति पर आधारित एक श्रेष्ठ पुस्तक

यज्ञ पद्धति

पृष्ठ 120, रंगीन आवरण, उत्तम कागज, आकर्षक कलेवर युक्त एक विशेष पुस्तक

मूल्य : ३५ रुपये

प्रकाशक- आर्य उप प्रतिनिधि सभा
कार्यालय : आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट,
अमरोहा-244221 (उ0प्र0), दूरभाष : 05922-262033
चलभाष- 09758833783, 09412139333

श्रावणी पर्व पर वेद प्रचार

बस्ती। आर्यसमाज नई बाजार बस्ती द्वारा आयोजित श्रावणी उपाकर्म एवं वेद प्रचार सप्ताह कार्यक्रम का प्रारम्भ ऋग्वेद के मंत्रों से हुआ। इस अवसर पर पारिवारिक यज्ञ के अन्तर्गत आनन्द स्वरूप-कंचनलता आर्य के निवास पर वैदिक यज्ञ कराते हुए पं. विमल कुमार ने श्रावणी उत्सव का महत्व बताया कि प्राचीन ऋषियों ने श्रावणी पर्व वेदों को श्रवण करने के लिए बताया। इस समय पुराने यज्ञोपवीत उतारकर नये यज्ञोपवीत धारण करने का विधान है। प्राचीन काल में

तपस्वी महात्मा जन गृहस्थों के घर आकर उनको वेद ज्ञान प्रदान करते थे। इसी समय से गुरुकुल में शिष्यों का उपनयन करके उनकी शिक्षा प्रारम्भ की जाती थी। इस अवसर पर मोहित कुमार, दिलीप कसौंधन, राम अग्रवाल, शंकर प्रसाद, राम नारायण, कुसुम कुमारी, निर्मला देवी, प्रेमा गुप्ता, मीरा गुप्ता, कौशल्या जायसवाल, मनोरमा देवी, बेबी, शोभित, आदित्य, नितीश, अमन, मनोज कुमार, घनश्याम आर्य, राधेश्याम, प्रियंका आर्य सहित अनेक लोग उपस्थित रहे।

श्रावणी पर्व पर यज्ञ में आहुति डालते यजमान -केसरी

निबन्ध प्रतियोगिता में प्रतिभाग करते विद्यार्थी -केसरी

नैतिक शिक्षा और आर्यसमाज पर प्रतियोगिता

56 छात्राओं ने लिया प्रतियोगिता में भाग

अलवर। स्वतंत्रता सेनानी छोटू सिंह आर्य संस्थापक अध्यक्ष, आर्य कन्या विद्यालय समिति के 94वें जन्म दिवस के अवसर पर आर्य समाज, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर के तत्वावधान में उच्च बालिका माध्यमिक विद्यालय स्वामी दयानन्द मार्ग में नैतिक शिक्षा और आर्यसमाज विषय पर तृतीय निबंध प्रतियोगिय आयोजित हुई। चार वर्गों में प्रथम वर्ग (कक्षा 1 से 5), द्वितीय वर्ग (कक्षा 6 से 8), तृतीय वर्ग (कक्षा 9 से 12) एवं चतुर्थ वर्ग छात्रायें) कुल 56 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में प्रत्येक वर्ग में प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर अशोक सैनी (डायरेक्टर त्रेहन होम डवलपर) व जगदीश प्रसाद गुप्ता, प्रधान का विशेष सहयोग रहा।

आर्यावर्त केसरी के आजीवन व संरक्षक सदस्य बनें

आदरणीय बन्धुओं! सप्रेम अभिवादन,

आर्यावर्त केसरी आपका अपना पत्र है, जो विश्वभर में वैदिक संस्कृति, राष्ट्रीय चिन्तन व आर्यत्व के प्रचार-प्रसार के लिए संकल्पबद्ध है। आर्यावर्त केसरी की संरक्षक सदस्यता सहयोग राशि रु० 3100/- तथा आजीवन सदस्यता हेतु सहयोग राशि रु० 1100/- है। कृपया अपनी सदस्यता सहयोग राशि 'आर्यावर्त केसरी' के नाम से भारतीय स्टेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता सं० 30404724002 अथवा सिंडीकेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता सं० 88222200014649 में सीधे जमा करा सकते हैं, जिसकी सूचना अपने पासपोर्ट साइज़ फोटो, नाम, पते व चलभाष सहित अविलम्ब हमें भेज दें। सहयोग राशि एकाउन्टपेयी चैक या धनादेश द्वारा भी भेजी जा सकती है। सभी मान्य संरक्षक सदस्यों व आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र व शुभ नाम प्रकाशित किये जाएंगे। इस प्रकाशन यज्ञ में आपकी सहयोग रूपी आहुति प्रार्थनीय है। धन्यवाद,

डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी,
आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.),
दूर.-05922-262033, चल.- 09758833783 / 08273236003

आइये! आज ही आर्यावर्त केसरी के मिशन से जुड़िए...

आर्यावर्त केसरी

संरक्षक
श्रीराम गुप्ता
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक', विनय प्रकाश आर्य, शिव कुमार आर्य
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मिश्र, यतीन्द्र विद्यालंकार, रवित विश्नोई, डॉ. ब्रजेश चौहान
मुद्रण- फरमूद सिद्दीकी, इशरत अली
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस के लिए आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-
आर्यावर्त केसरी
मुरादाबादी गेट, अमरोहा
उ.प्र. (भारत) -२४४२२१
से प्रकाशित एवम् प्रसारित।
☎:05922-262033, 9412139333 फैक्स : 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
E-mai :
aryawart_kesari@rediffmail.com
aryawartkesari@gmail.com

जय हिन्द   जय हिन्द

समस्त क्षेत्रवासियों का हार्दिक अभिनन्दन

वंदन अपनी मातृ भूमि का,
आराधन अपनी भाषा का।
अभिनन्दन अपनी संस्कृति का,
नमन कोटि जन अभिलाषा का॥

डॉ0 अशोक कुमार रुस्तगी (आर्य)

सम्पादक- आर्यावर्त केसरी/अध्यक्ष- रूटा (RUTA)

बरेली-मुरादाबाद खण्ड स्नातक निर्वाचन क्षेत्र से 'एम.एल.सी.' के

सम्भावित प्रत्याशी

(Mob. : 09412139333)